IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कोरिया रियासत : भौगोलिक एवं ऐतिहासिक सर्वेक्षण

सुशील कुमार जांगड़े[1] एवं डॉ. शशिकला सिन्हा[2]

1. शोधार्थी, अटल बिहारी बाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

2. शोध निर्देशक, शासकीय शबरी माता नवीन कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

''कोरिया रियासत का सामान्य परिचय'' में भौगोलिक स्थिति, ऐतिहासिक पृष्ठभमि, सांस्कृतिक विरासत, लोक कला, उत्सव, पर्व, मेला, रहन–सहन, जीविकोपार्जन के साधन एवं रियासत की भाषा एवं बोली तथा कोरिया रियासत से सम्बंधित लेख, साहित्य का परिचय दिया जायेगा। कोरिया रियासत की स्थापत्य कला, गुफाएँ, मंदिर, किला एवं महल आदि को विवेचित किया जायेगा एवं कोरिया रियासत की धार्मिक प्रतिमाओं का विश्लेषण किया जाना प्रास्तावित है।

प्रस्तावना

प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ राज्य विशेष महत्त्व रखता है। रामायण काल में छत्तीसगढ़ को दण्डकारण्य की संज्ञा दी गई। महाभारत काल में इसे दक्षिण कोसल के नाम से जाना गया। इसके पश्चात् गुप्त काल में समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति में कोसल के राजा महेन्द्र पर विजय से दक्षिणापथ अभियान के आरम्भ का उल्लेख प्राप्त होता है। विद्वानों का मत है कि दक्षिण कोसल ही वर्तमान छत्तीसगढ़ का क्षेत्र है। प्राकृतिक सम्पदा से समृद्ध, दक्षिण कोसल की भूमि पर शासन करने वाले वंशों में नंद वंश, मौर्य वंश, सातवाहन, मघ, वाकाटक, गुप्त, राजर्षितुल्य कुल, नलवंश, शरभपुरीय वंश, चक्रकोट (बस्तर) के छिंदकनाग वंश, कवर्धा के फणिनाग वंश, कलचुरि वंश की तीनों शाखायें (रतनपुर के कलचुरि, रायपुर के कलचुरि और कवर्धा के कलचुरि) एवं कांकेर का सोमवंश आदि है। उक्त राजवंशों के काल में दक्षिण कोसल धरा राजनीति, कला और संस्कृति की महत्त्वपूर्ण केन्द्र थी। यहाँ के विभिन्न पुरातात्त्विक स्थलों से शैव, वैष्णव, शाक्त एवं जैन व बौद्ध धर्म की स्थापत्य एवं प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं।

छत्तीसगढ़ के पुरातात्त्विक स्थलों में सिरपुर, मल्हार, राजिम, पाली, रतनपुर, शिवरीनारायण, बारसूर, दंतेवाड़ा, नारायणपुर, भोरमदेव एवं सरगुजा आदि विशेष महत्त्व रखतें हैं। 'कोरिया रियासत'में मध्यभारत का एक मात्र प्राचीनतम् समुद्री जीवाश्म पार्क स्थित है। जिले में प्राकृतिक गुफाएँ, शैलचित्र, शैलोत्कटित गुफाओं की श्रृँखला, शैव, वैष्णव, शाक्त, जैन व बौद्ध धर्मों तथा तत्जनित कला एवं स्थापत्य दृष्टव्य हैं। यहाँ से प्राप्त किला एवं किलेबंदी, अभिलेख इतिहास क्रम को प्रतिबिम्बित करते हैं।

कोरिया रियासत का भौगोलिक अध्ययन

कोरिया रियासत छत्तीसगढ़ की उन्नत रियासतों में से एक थी। छत्तीसगढ़ की अन्य रियासतों से बहुत पहले ही खनन, सहकारिता, शिक्षा, विद्यालय में मध्यान्ह भोजन, बालिकाओं की शिक्षा, रियासत का आर्थिक सर्वेक्षण, वन का विकास, न्यूनतम मजदूरी भुगतान आदि कई क्षेत्र पर रियासत में तीव्र गति से कार्य प्रारम्भ हो गये थे। कोरिया के महाराजा रामानुज प्रताप सिंहदेव जी के कार्यकाल में विद्यालयों में मध्यान्ह भोजन के रूप में गुड़–चना दिया जाता था।

स्थिति एवं विस्तार –

कोरिया रियासत की धरातलीय संरचनाओं में पहाड़ियॉ, पठार और मैदानी क्षेत्र आते है। इसमें 1.श्रीनगर का मैदानी क्षेत्र, 2.सोनहत का उच्च पठार, 3.भरतपुर का पठार एवं4.सोनहत का पहाड़ी क्षेत्र प्रमुख है। कोरिया रियासत की सबसे ऊँची चोटी सोनहत तहसील के अर्न्तगत देवगढ़ की पहाड़ी है, जिसकी ऊँचाई लगभग 3370 फीट (लगभग 1027 मीटर) मानी जाती है।वर्तमान में कोरिया रियासत की समुद्री सतह से औसत ऊँचाई लगभग 700 मीटर है।रियासत के सोनहत क्षेत्र में पहाड़ी क्षेत्र का विस्तार पाया जाता है। इनमें रामगढ़ और कोरियागढ़ की पहाड़ी का क्षेत्र भी फैला हुआ है, जो पूर्व कोरिया रियासत को दो भागों में पूर्वी और पश्चिमी भाग में विभाजित करता था। इसी कोरियागढ़ की पहाड़ी को सुरक्षा के अनुकूल मानकर, कोल शासकों ने इसे अपनी राजधानी बनाकर पूरे कोरिया रियासत पर शासन किया था। कोल शासको के शासन काल के स्थापत्यअवशेष आज भी यहॉ यदा–कदा बिखरे हुए पाये जाते है। कोरिया रियासत के कोल शासकों ने रियासत की इन पहाड़ियों का सुरक्षा के लिए भरपूर उपयोग किया था।

नदियाँ

कोरिया रियासत का बहुत कम भू–भाग का ढलान उत्तर दिशा की ओर होने के कारण कुछ नदियों का बहाव उत्तर दिशा की ओर होता है।पहाड़ी क्षेत्रों में सँकरी घाटियों से बहती हुई ये नदियाँ उत्तर की ओर सोन नदी मेंज. ।मिलती है और इसके पश्चात् गंगा नदी के प्रवाह का हिस्सा बन जाती है। रियासत की प्रमुख नदियों में हसदो, बनास, गोपद और गेज,झुमका आदि प्रमुख हैं। इनका पानी बहते हुए विभिन्न स्थानों पर ऊँचाईसे गिरकर सुन्दर जलप्रपात बनाता हैं।

खनिज संपदा एवं आय का स्रोत :–

कोरिया रियासत की आय का प्रमुख स्राोत भूगर्भीय कोयले का भंडारहै। कोरिया में कोयले का प्रारंभिक उत्खनन सन् 1913 ई. में अनाधिकृत रूप से हो चुका था। सन् 1928 ई. में कोयला खनन का प्रथम लीज़ नागपुर के बंशीलाल अबीरचंद और टाटा को दी गई थी।कारीमाटी (झगराखण्ड का नार्थ और साउथ ब्लाक) में कोयला माइन्स में सन् 1927 ई. में आग लग जाने से लोगो के पुनर्वास एक प्रमुख समस्या बन गई थी। इसके समाधान के लिए ही सन् 1930 ई. एक बस्ती बसाई गई थी, इसका नामकरण राजा रामानुज प्रताप सिंह देव के द्वितीय पुत्र कुमार मनेन्द्र प्रताप सिंह देव के नाम पर "मनेन्द्रगढ़" किया गया था। जो आगे चलनकर कोरिया रियासत की औद्योगिक राजधानी के के रूप में विकसित हुई।

कोरिया में रेल्वेट्रेक बिछाने का कार्य सन् 1928 में आरंभ हुआ जो सन् 1331 ई. में पूर्णरूप से बनकर तैयार हुआ। यह रेल्वे ट्रेक दक्षिणपूर्वी रेल्वे कीअनूपपुर–चिरमिरी शाखा मार्ग मे आता है। इसी ट्रेक से क्षेत्र में उत्खनित कोयला को बाहर भेजा जाता है। कोरिया रियासत में 'ए' और 'बी' ग्रेड के कोयले का उत्पादन होता है, कोयला कृषि के बाद दूसरामुख्य जीविकोपार्जन का स्रोत है।

कोरिया रियासत का नामकरण :–

रियासत काल में इस भू–भाग का नाम कोरिया होने के पीछे विभिन्न विद्वानों ने अपने अपने मत व्यक्त कियें हैं। एक मत के अनुसार–''कोरिया शब्द करिया (काला) अथवाकोयला से ही बना है।'' इसके पीछे उनका तर्क है कि रियासत का यह क्षेत्र कोयला संपन्न है और कुछ स्थानों पर भूमि की सतह पर ही कोयला उपलब्ध हो जाता है। भूमि की सतह में कोयला मिलने के कारण क्षेत्र की जमीन भी काली हो जाती है। इसीकारण इस क्षेत्र को प्राचीनकाल में 'कारीमाटी' कहा जाता था। दूसरे मतानुसार–''कोरिया शब्द प्रचुर मात्रा प्राकृतिक कोयले की सहज उपलब्धता एवं उत्खनन की सुगमता के कारण (कोड़या अथवा करिया शब्द से)से इसका नाम कोरिया पड़ा है।''

इस भू भागमें प्राचीनकाल से ही प्रचुर मात्रा में कोयला उपलब्ध होने के कारण, स्थानीय निवासीके लोगकोयला को कोड़कर (कोड़या अथवा उत्खनन करके)अपनी आजीविका का निर्वहन करते आ रहें हैं। इस प्रकार कोड़ कर (कोड़या) निकाली जाने वाले कोयला(करिया अथवा काला)के कारण, इस पूरे भू–भाग को कोरिया कहा जाने लगा होगा। इस प्रकार इस रियासत का नाम कोरिया पड़ गया।

ऐतिहासिक सर्वेक्षण :–

सर्वेक्षण एवं प्राप्तसाक्ष्यों के अध्ययनपता चलता है कि कोरिया रियायत का इतिहास बहुत प्राचीन है इसका प्रमाण रियासत के विभिन्न क्षेत्रों जैसे लावाहोरी, तिलौली, कोहबाउर, बदरा हिल्स सेप्राप्त होने वाले शैलचित्र हैं। जो इसके प्राचीनता का जीता जागता प्रमाण है। इसके अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रों में निर्मित सीतामड़ियाँ की शैलकटित गुफाएँ जैसे कँजिया, हरचोका, घघरा, छतौड़ा, रामगढ़, नटवाही आदि में से हरचोका की शैलकटित गुफा के स्तंभों में उत्कीर्णित प्राचीन लिपि भी प्राप्त हुए है। कँजिया ग्राम के निकट सीतामड़ियाँ में सूक्ष्म उपकरण इस क्षेत्र के ऐतिहासिकता की पुष्टि करते है।

मध्यकालीन इतिहास :–

इतिहासकार कोरिया रियासत को मगध शासन का एक भाग मानते हैं। मगध के पश्चात् जैनखारवेल और सातवाहनों के शासको का प्रभाव कोरिया क्षेत्र तक होना इंगित करता है। प्रयाग प्रशस्ति लेख के अनुसार समुद्रगुप्तने अपने दक्षिण पथ विजय अभियान के दौरान कोसल के शासक महेन्द्र को परास्त करइस भू–भाग पर अधिकार किया था।गुप्त काल में महाकविकालिदास द्वारा रचित प्रसिद्ध ग्रंथ मेघदूतकी रचना, कोरिया रियासत के सुरम्य प्राकृतिकवन क्षेत्र में किया गया माना जाता है। इसके पश्चात् राजपूत प्रतिहार वंश का शासन स्थापित हो गया है।राजिम में प्राप्त शिलालेख, रतनपुर के कलचुरि शासक जगपाल के कार्यकाल में जमीन्दारी के उदय की ओर इशारा करता हैं। जिसमें खड़गवाँ जमींदारी में चिरमिरी के बरतुंगा पहाड़ी पर 1331 ईस्वी का शिलालेख प्राप्त हुआहै। जिसमें गोविन्द चूड़देव एवं अन्य का उल्लेख मिलता है।

इसी जमींदारी के क्षेत्र मंगोरा ग्राम में हसदो तट पर प्राचीन स्तंभ लेख प्राप्त हुआ है।इसी प्रकार हर चौकाकी गुफा के स्तंभ से प्राप्त अभिलेख में से दो अभिलेख कलचुरि कालीन और एक चौहान कालीन प्रतीत होता है। इन अभिलेखों से इन शासकों का इस क्षेत्र में शासन की पुष्टि होती है।कोरिया रियासत का इतिहास मुग़ल और कलचुरी काल के पश्चात अधिक स्पष्ट होता है।

डाल्टन के अनुसार उत्तर में स्थित सीधी क्षेत्र में बालन्द वंश का शासन था, जिनकी सत्ता का विस्तार कोरिया रियासत तक था। बालन्द वंश के वंशजों ने कोरिया के कुदरगढ़ (भईयाथान के पास) में महामाया मंदिर का निर्माण कराया था जो कुदरगढ़ मंदिर के नाम से पहचाना जाता है।इस क्षेत्र के कोंच–कोल जनजातीय ने गोड़ जमीदारों के सहयोग से बालंद शासको को हटाया था किन्तु उत्तरी सघन वन क्षेत्रों में बालंद का प्रभाव स्थापित रहा। अब भी भरतपुर के ग्राम लावाहोरी में बालन्द सरनेम का उपयोग करने वाले परिवार निवास करते है। बालंद शासकों के पतन के बाद कोंच–कोल की ग्यारह पीढ़ी ने कोरिया में शासन किया। इन्होने अपनी राजधानी कोरियागढ़ पहाड़ (बचरा–पोड़ी के निकट वर्तमान खड़गवाँ) को बनाया था। इनके शासनकाल के भग्नावशेष तालाब, भवन के शिलाखण्ड, कुँआ आदि अब भी पाये जाते हैं।

मुगल शासक अकबर ने रतनपुर के कलचुरी शासक कल्याण साय व महाकोसल के गोड़ शासक को परास्त किया तथा इस क्षेत्र कानियंत्रण कलचुरी वंश को सौंप दिया, बदले में मुगल शासक कलचुरी शासक से लगान वसूली करते थे।

कोरिया के कोंच–कोल शासकों को सत्ता से हटाकर अग्निकुल क्षत्रीय या राजपूत वंश कोरिया रियासत की सत्ता में आया था। जो कोरिया रियासत का अंतिम राजवंश साबित हुआ।

अग्निकुल क्षत्रीय या राजपूत वंश मोहम्मद गोरी से पृथ्वीराज चौहान के पराजित होने के पश्चात् मैनपुरी (आगरा के समीप) आ बस गया था, उनके वंशज के दोनो भाई दलथम्मन (दलयमन) शाही और धारामल शाही (धौरेल साही) लगभग 1750 ईस्वी में इस क्षेत्र में आयें थे। उस समय सरगुजा के शासक की अनुपस्थिति में संकटग्रस्त सरगुजा और रानी की सुरक्षा में सहयोग कर सरगुजा शासक के विश्वास पात्र बन गये। सरगुजा की रानी ने दोनों भाइयों को राखी बाँधकर भैया की उपाधि प्रदान की।

मुगल शासको के पतन व मराठा साम्राज्य के उदय काल में बड़े भाई दलथम्मन (दलयमन) शाही ने झिलमिली क्षेत्र में बालंद शासकों हराकरशासन कोअपने अधिकार में ले लिया। इसी क्षेत्र को'भैया का स्थान' कहा जाने लगा, जो वर्तमान में भैयाथान के नाम से जाना जाता है।

छोटे भाई धारामल शाही (धौरेल साही) ने कोंच–कोल को पराजित कर कोरिया की सत्ता अपने हाथ में ले लिया। बड़े भाई दलथम्मन (दलयमन) शाही छोटे भाई धारामल शाही (धौरेल साही) को विधिवत कोरिया का शासक बनते हुए उन्हें 12 ग्राम उपहार में दिए। इस प्रकार धारामल शाही (धौरेल साही) ने कोरिया रियासत में चौहान वंश के शासन की नींव रखी और प्रथम शासक बने। इन्होनें सर्वप्रथम चिरमी को अपनी राजधानी बनाया। कालांतर में कोरिया रियासत की राजधानी चिरमी से नगर,नगर से रजौली, रजौली से सोनहत और अंत में बैकुण्ठपुर में स्थापित किया। इस प्रकार कोरिया रियासत के चौहान राजवंश की प्रथम राजधानी चिरमी और अंतिम राजधानी बैकुण्ठपुर बनी।

कोरिया जिले पर आलेख एवं साहित्य :–

छत्तीसगढ़ राज्य के पश्चिमोत्तर जिला और मध्यप्रदेश की सीमावर्ती जिला होने के कारणइसका विशिष्ट महत्व है। यहाँ की भौगोलिक स्थिति, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, राजनीति, प्रषासनिक,शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं पुरातात्त्विक स्थिति का वर्णन बहुत अल्प जानकारी अथवा ढूढने पर यदा–कदामिलती हैं। जिले की पूर्ण जानकारी को प्राप्त करने को कोई ठोस स्रोत नही है। कोरिया जिले पर आलेख, साहित्य एवं प्रस्तुतियों का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है :–

- बरतुंगाद्वार शाखा अभिलेख (1431), बरतुंगा पहाड़ी, खड़गवाँ, कोरिया में स्थित(आंशिकपठित)।
- मंगोराका स्थापत्य खण्ड लेख (लगभग 15 वीं सदी), मंगोरा, खड़गवाँ, कोरिया में कोटेश्वरी मंदिरकेनिकट स्थित (आंशिक पठित)।
- कोरियाचौहान वंश राजपरिवार की मूल वंशावली (लगभग 1750 से आरंभ)स्रोतप्रभातकुमारसिंह, भगवानपुर, भरतपुर, कोरिया।
- कनिंघम,अलेक्ज़ेडर(1878)आर्कियोलाजिकल सर्वे रिपोर्ट ऑफ इंडिया,वाल्युमः8एटूरथ्रोदबंगालप्रोविन्स इन 1872–73
- ई. ए. डी. ब्रेट (1909) छत्तीसगढ़ फ्यूडेटरी स्टेट्स, गजेटियर ऑफ इंडिया (रिप्रिन्टःएन.पी.पाण्डे, गजेटियर यूनिट, संचालनालय राजभाषा एवं संस्कृति, मध्यप्रदेश शासन, भोपाल,1997)
- मार्टिन रिपोर्ट (1910–11), मार्टिन रिपोर्ट ऑफ द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ सी.पी. एण्ड बरार, 1910–11.
- रोज़र्स एण्ड बेवरीज़ मेमोरिज़ ऑफ जहाँगीर, भाग–2.
- प्रसाद, रघुवीर झारखण्ड झंकार, सरगुजा समूह की रियासतों पर केन्द्रितपुस्तक।
- भरतपुर संगमरमर लेख (1939), राधाकृष्ण मंदिर परिसर, भरतपुर, कोरिया।
- सेनापति, नीलमणी (1971) गजेटियर ऑफ इंडिया, उड़ीसा डिस्ट्रिक गजेटियरसम्बलपुर।
- सिन्हा, जनरल एस.के. वीर कुँवर सिंह 1857 के महान योद्धा।
- वीरोत्तम, डॉ. व्ही. झारखण्ड इतिहास और संस्कृति।
- गुप्त, प्यारे लाल (1973) प्राचीन छत्तीसगढ़, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर।
- अली, सलीम (1985) द फॉल ऑफ स्पेरो, आक्सफोर्ट यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली।
- वर्मा, राजेन्द्र (1989) मध्यप्रदेश जिला गजेटियर, सरगुजा (अँग्रजी), संस्कृति विभाग, भोपाल।
- वर्मा, राजेन्द्र (1998) मध्यप्रदेश जिला गजेटियर, सरगुजा (हिन्दी, प्रथम संस्करण), संस्कृति विभाग, भोपाल।
- सिंहदेव, डॉ. रामचन्द्र सोसियो इकानॉमिक हिस्ट्री एण्ड एडमिनिस्ट्रेटिव सेटअप ऑफ कोरिया स्टेट।
- सिंह, समर बहादुर सरगुजा का ऐतिहासिक पृष्ठ।
- सिंह, नेत्र पाल मैनपुरी का वह खूनी दिन।
- जैन काँति कुमार बैकुण्ठपुर में बचपन।
- अलग, संजय कोरिया रियासत का प्रशासनिक अध्ययन।
- अलग, संजय (2011 एवं संस्करण 2014) छत्तीसगढ़ का पूर्व रियासतें एवं जमींदारियाँ, वैभव प्रकाशन, रायपुर।
- सिंह, रमेश एवं अन्य कोरिया संदर्भ (फोल्डर) मनेद्रगढ़, कोरिया (छ.ग.)

- वर्मा, कामता प्रसाद (2014) 'भरतपुर जिला कोरिया की पुरासंपदा परिचय' (फोल्डर), संचालनालय संस्कृति एवं पुरातत्त्व, रायपुर (छ.ग.)

कोरिया जिले की स्थापत्य कला–गुफाएँ, मंदिर, किला एवं महल

किसी रियासत की ऐतिहासिकता को व्यक्त करने में स्थापत्य कला का विशेष स्थान होता है। कालचक्र में इनके साक्ष्य प्राप्त होते है। कोरिया रियासत की स्थापत्य कला के रूप में मुखतः शैलोत्त्कटित गुफाएँ, मंदिर, किले व किलेबन्दी आदि का विवेचन निम्नलिखित है :–

(अ) कोरिया जिले की शैलोत्त्कटित गुफाएँ :–

शैलोत्त्कटित गुफा हरचोका, घघरा, कँजिया एवं छतौड़ा (भरतपुर तहसील), सलवा–घुटरा (मनेन्द्रगढ़ तहसील), रामगढ़, नटवाही एवं कछार (सोनहत तहसील) आदि मुख्य हैं। जो सघन वन एवं पहाड़ी क्षेत्रों में जल स्रोत के निकट अवस्थित है।

1. सीतामढ़ी :

- हरचोका की शैलोत्त्कटित गुफा श्रृँखला, हरचोका (भरतपुर) :–

रियासत कोरिया के भरतपुर क्षेत्र का हरचौका ग्राम से पूर्व सीतामढ़ी हरचौका की चट्टान को काटकर गुफा बनी हुई हैं। इनमे कुल 18 शैलोत्त्कटित गुफाओं की वृहद श्रृँखला पायी गई है। जो कोरिया की सबसे बड़ी गुफा श्रृँखला है, जिसे लगभग 100 वर्ग मीटर क्षेत्रफल के एकाश्म चट्टान को काटकर किया गया है। यहॉ प्रतिवर्ष चैत्र नवरात्रि (रामनवमीं) को 04 दिन का मेला लगता है।6

- घघरा की शैलोत्त्कटित गुफा, घघरा (भरतपुर) :–

भरतपुर के ग्राम घघरा से लगभग 02 कि.मी. की दूर राँपा नदी स्थित है। इसे लगभग 50 मीटर लंबी और 30 मीटर चौड़ी एकाश्म चट्टान (Monolithic Rock) को काटकर बनाया गया है। इसके सम्बंध में किंवदंती है कि श्रीराम, लक्ष्मण और सीता वनवास के समय जब दक्षिण कोसल में आये थें, तब वे चित्रकूट से आते समय घघरा की इस गुफा में एक दिन विश्राम किये थे। माता सीता ने जिस गुफा में विश्राम किया था, उसे स्थानीय जनसमुदाय सीता शैय्या कहता हैं।

- छतोड़ा की शैलोत्त्कटित गुफा :–

भरतपुर का सीतामढ़ी, छतौड़ा ग्राम से 01 कि.मी पहले सीतामढ़ी छतोड़ा स्थित है। गुफा का अधिकांश भाग, सीतामढ़ी हरचौका के गुफाओं के समान ही भूमिगत है।

- हाथी गुफा : शैलोत्त्कटित गुफा, सलवा–घुटरा, मनेन्द्रगढ़ :–

हाथी गुफा, शैलोत्त्कटित गुफा सलवा ग्राम से लगभग 01 किलोमीटर की दूरी पर सीतामढ़ियाँ, सलवा की शैलोत्त्कटित भूमिगत गुफा स्थित है।

सीतामढ़ियाँ, सलवा–घुटरा की विशिष्टता :–

हाथी गुफा अन्य गुफाओं से कुछ बातों में विशिष्ट है। एक मात्र शैलोत्त्कटित गुफा, जिसके मुख्य कक्ष में जलहरी का निर्माण कर शिवलिंग स्थापित किया गया है। निर्माण शैली दक्षिण भारतीय पल्लव शासकों के गुहा स्थ. ापत्य से समानता रखती है। जो महेन्द्र शैली (610–640 ईस्वी) से प्रेरित है। इसे प्रसिद्ध पाश्चात्य कलाविद् पर्सी ब्राउन ने 04 शैली में विभाजित किया है।

1. महेन्द्र शैली : मण्डप वास्तु (610–640 ईस्वी) :–

पल्लव वास्तु कला एवं इस स्थापत्य शैली का प्रारम्भ पल्लव शासक महेन्द्रवर्मन प्रथम के काल में हुआ, अतः इसे महेन्द्र शैली कहते है।

2. मामल्ल शैली : मण्डप एवं रथ मंदिर (640–674 ईस्वी) :–

इस शैली का प्रारंभ नरसिंह वर्मा प्रथम, महामल्ल के समय से माना जाता है, इसलिए इसे 'मामल्ल शैली' कहा गया। इन रथ मंदिरों, को दक्षिण भारतीय द्रविड़ मंदिरों के पूर्वज कहे जा सकते है। ये रथ अपनी मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध है।

3. राजसिंह शैली : इमारती मंदिर (674–800 ईस्वी) :–

इस शैली का आरंभ नरसिंह वर्मन द्वितीय 'राजसिंह' के काल में हुआ, अतः इसे राजसिंह शैली कहा जाता है। महाबलीपुरम के समुद्र तट पर स्थित 'शोर' (तटीय) शिवमंदिर और काँची का राजसिंह मंदिर प्रमुख है।

4. नन्दीवर्मन शैली : वेसर शैली के छोटे मंदिर (800–900 ईस्वी) :–

पल्लव कालीन अंतिम स्थापत्य शैली का आरंभ नन्दीवर्मन के काल में हुआ।प्रारम्भिक सर्वेक्षण और अध्ययन के आधार पर कोरिया में निर्मित इन शैलोत्त्कटित गुफाओं का निर्माण काल लगभग 9वीं से 10वीं सदी ईस्वी के मध्य है।

2. कैलाश गुफा : रामगढ़ की शैलोत्त्कटित गुफा, रामगढ़ ग्राम, सोनहत, कोरिया :–

कैलाश गुफा, सोनहत के ग्राम रामगढ़ से जनकपुर मार्ग पर स्थित है। स्थानीय लोग इसे कैलाश गुफा, रामगढ़ कहते हैं। रामगढ़ के कैलाश गुफा का अधिकांश भाग भूमिगत है। स्थल का बिन्दुवार जानकारी निम्नलिखित है :–

शिव गुफा : शैल कटित गुफा, कछार, (सोनहत) :–

कछार ग्राम सोनहत में स्थित है। स्थानीय लोग इसे शिवगुफा कहते हैं। यह हसदो नदी के तट पर स्थित है।

गांगीरानी : शैलोत्त्कटित गुफा, नटवाही ग्राम, (सोनहत) :–

गांगीरानी सोनहत के ग्राम नटवाही के क्षेत्र में है। 02 कि.मी. की दूर एक नाला प्रवाहित होता है। जिसे गांगीरानी नदी कहते हैं।

मंदिर स्थापत्य और इसका भग्नावशेष :–

कोरिया के ऐतिहासिक पुरातत्त्व के अन्तर्गत जिले के मंदिर स्थापत्य और इसके भग्नावशेष को सम्मिलित किया गया है।

मूल अवस्था में: खड़ी, जिले की एकमात्र मंदिर होने का गौरव शिवमंदिर, घघरा को प्राप्त है।

भग्नावशेषोंमें: कोटेश्वर मंदिर, नानभान, में देवगढ़ के मंदिर, के भग्नावशेष धवलपुर, राधा–कृष्ण मंदिर के भग्न. ावशेष, डोंगरी टोला बरबरसपुर, महदेवन कारीमाटी, खमरौध के भग्नावशेष, चिरमिरी में बरतुंगा, के भग्नावशेष महरा. जपुर के भग्नावशेष, धवलपुर के स्थापत्य भग्नावशेष आदि प्रमुख स्थल है।

इनका विवेचन निम्नखित है :–

1. शिव मंदिर, घघरा (भरतपुर) :–

भरतपुर के घघरा ग्राम के अंदर शिवमंदिर स्थित है। यह मंदिर त्रिरथ शैली में निर्मित है। इसमें भूरे रंग के बालुई पाषाण का उपयोग किया गसा है। इस मंदिर के गर्भगृह के मध्य में एक नवीन जलहरी स्थापित है। परन्तु गर्भगृह अथवा जलहरी में कोई प्रतिमा स्थापित नही है। गर्भगृह से उत्तर दिशा की ओर सतह पर जल निकासी हेतु प्रणालिका निर्मित है। जिससे स्पष्ट होता है कि यह एक शिवमंदिर है।

2. कोटेश्वर मंदिर भग्नावशेष एवं प्रतिमाएँ मंगोरा, खड़गवाँ :–

कोटेश्वर मंदिर, मंगोरा ग्राम, खड़गवाँ, से दक्षिण दिशा में हैं। जो हसदो–बभनी नदी के संगम पर स्थित है। स्थल पर बिखरे भग्नावशेषों में प्रतिमाएँ, मंदिर कि अवशेष और शिलालेख प्राप्त होते है। जिससे प्रतीत होता है कि कोटेश्वर मंदिर प्रागण में मंदिरों का समूह स्थापित रहा होगा। इसमें शिवमंदिर, विष्णु मंदिर और सरस्वती मंदिर होने के संकेत मिलते है।

3. देवगढ़ मंदिर एवं भवन के भग्नावशेष, नानभान, बैकुण्ठपुर :–

बैकुण्ठपुर से नानभाग ग्राम पटना से उत्तर दिशा में चामट पहाड़ की गोद में स्थित है। देवगढ़ में मंदिर भग्न. ावशेष स्थित है।देवगढ़ स्थल पर उपलब्ध मंदिर भग्नावशेषों में द्वारशाखा, सिरदल, आमलक, कीर्तिमुख, चैत्य गवाक्ष, अलंकृत प्रस्तर खण्ड और अन्य गढ़े व अनगढ़ प्रस्तर खण्ड आदि प्राप्त हुए है।

4. महदेवन कारीमाटी मंदिर भग्नावशेष, खमरौध :–

खमरौध ग्राम, जनकपुर से कोटाडोल रोड में स्थित है। इसे कारीमाटी नाम से भी जाना जाता है। जनश्रुति है कि यह बहुत प्राचीन स्थल हैं यहाँ पर देवताओं का वास है। शासकों ने इस मंदिर को बनााने का प्रयास किया, किन्तु असफल होकर इस मंदिर के गढ़े और अनगढ़ पत्थरों को वैसा ही छोड़कर चले गए, तब से यह वैसा ही पड़ा है। यहॉ अवशेष के रूप में मंदिर गढ़े हुए और अनगढ़ दोनो भाग देखने को मिलते है।

5. शिव मंदिर भग्नावशेष, राधा–कृष्ण मंदिर परिसर, भरतपुर (चाँगभखार) :–

चाँगभखार रियासत का मुख्यालय भरतपुर था यहाँ बनास नदी के बाँए तट पर राधा–कृष्ण का मंदिर स्थापित है। जिसे कैलाशपुर धाम के नाम से भी जाना जाता है। मंदिर परिसर में स्थापित लेख को भरतपुर संगमरमर लेख के नाम से भी जाना जाता है। मंदिर अवषेश, शिवलिंग और प्रतिमाओं के आधार पर यह शिव मंदिर 13वीं –14वीं शताब्दी का निर्मित हुआ होगा।

6. विष्णु मंदिर भग्नावशेष, डोंगरीटोला, बरबसपुर, मनेन्द्रगढ़ :–

डोंगरीटोला, बरबसपुर ग्राम के तालाब के किनारे मंदिर अवशेष बिखरे हुए है।

7. पठपर का मंदिर भग्नावशेष, महराजपुर (बैकुण्ठपुर) :–

बैकुण्ठपुर के महराजपुर ग्राम का पठपर पहाड़ी स्थित है। पठपर पहाड़ी के मध्य भाग में मंदिर भग्नावशेष है। जिसे स्थानीय निवासी 'गँवहा ठाकुर' कहकर पूजा करते है।

8. मंदिर समूह भग्नावशेष, धवलपुर (खड़गवाँ) :–

भग्न मंदिर समूह धवलपुर, खड़गवाँ में स्थित है। यहाँ मंदिर समूह के भग्नावशेष, प्रस्तर खण्ड और प्रतिमाएँ अवस्थित है।

कोरिया के किले एवं किलेबन्दी :–

किसी रियासत के गढ़, गढ़ी अथवा किला, क्षेत्र पर शासन करने वाले राजवंश की शक्ति का प्रतिबिंब होता है। कोरिया के गढ़, गौरवशाली राजवंश की कहानी सुनाते हैं। जिनमे मुरेलगढ़, भँवरखोह (भरतपुर), कोरियागढ़ पहाड़ का गढ़, गणेशपुर (खड़गवाँ) और सेन्द्रीगढ़ स्थल, बदरा, (सोनहत) आदि है। इनका विस्तृत वर्णन निम्नलिखित है :–

मुरेलगढ़ का किला, मुरेलगढ़ पहाड़ी, भँवरखोह (भरतपुर) :–

कोरिया के भरतपुर में भँवरखोह ग्राम बनास नदी के तट पर बसा है। यह नदी इस ग्राम को तीनों दिशाओं से घेरे हुए है, परन्तु नदी में पुल का निर्माण नही किया गया है।

कोरियागढ़ पहाड़ का भग्न किला (प्राचीन राजधानी) गणेशपुर, (खड़गवाँ)

गणेशपुर में कोरियागढ़ पहाड़ (कोरिया की प्राचीन राजधानी) स्थित है। इस पहाड़ को कोरिया की राजधानी बनाकर कोल शासकों की 11 पीढ़ी ने कोरिया पर शासन किया था। इसी क्षेत्र के नाम पर रियासत का नाम 'कोरिया' पड़ा है। इस पूरे कोयला क्षेत्र के कोल शासकों की राजधानी होने के कारण इसे कोरियागढ़ पहाड़ कहा गया।विभिन्न शासकों के काल में राजधानी परिवर्तित होती रही परन्तु इसका नाम नही बदला और इसे आज भी कोरिया कहा जाता है। भू–भाग से ऊँचाई लगभग 210 मीटर (689 फीट) अनुमानित है। पहाड़ी के ऊपर मध्य भाग में कोरिया की राजधानी 'कोरियागढ़' स्थित है। कोरियागढ़ पहाड़ी के ऊपर 'पातालपुरी गुफा' हैं। कोरियागढ़ पहाड़ी के ऊपर तुर्रा (प्राकृतिक जल स्रोत) स्थित है।

कोरिया रियासत की मूर्ति कला

कोरिया रियासत में प्रतिमाएँ एवं मूर्तियाँ शैलोत्त्कटित गुफाओं जैसे हरचोका, सलवा–घुटरा, नटवाही आदि स्थलों में स्थित हैं। इनके अलावा छिपछिपी, धवलपुर, बुन्देली, नानभान में देवगढ़, चिरमिरी में बरतुंगा, मंगोरा, भँवरखोह, सिरोली, आदि प्रमुख स्थलों से भी प्रतिमाएँ प्राप्त हुई है।

कोरिया रियासत से प्राप्त प्रमुख प्रतिमाएँ :–

कोरिया रियासत की अधिकांश प्रतिमाएँ रियासत की दक्षिणपूर्वी भाग से प्राप्त हुई है। रियासत से प्राप्त होने वाली प्रतिमाओं को मान्यताओं के अनुसार वर्गीकृत किया गया है। इनमे शैव, वैष्णव, शाक्त, और जैन–बौद्ध मतावलंबी प्रतिमाएँ शामिल है। इनका विवेचन निम्नलिखित है :–

1. शैवधर्म सम्पुदायकी प्रतिमाएँ :–

शैवधर्म से सम्बंधित प्रतिमाएँ जिले के प्रायः सभी पुरातात्विक स्थलों से न्यूनाधिक प्राप्त हुई है। इन स्थलों में भरतपुर–हरचौका, घघरा, चाँगभखार, भँवरखोह, मनेन्द्रगढ–छिपछिपी, बुन्देली, खड़गवाँ–धवलपुर, मंगोरा, बरतुंगा काला. नी चिरमिरी और बैकुण्ठपुर–नानभान आदि से प्राप्त हुई है।

2. वैष्णव सम्प्रदाय की प्रतिमाएँ :–

कोरिया जिले के पुरातात्विक स्थलों से वैश्णव धर्म से सम्बंधित प्रतिमाएँ न्यूनाधिक प्राप्त हुई है। इन स्थलों में मनेन्द्रगढ़–छिपछिपी, बुन्देली, सिरोली, खड़गवा–धवलपुर, मंगोरा, भरतपुर–हर चौका, भँवरखोह, बैकुण्ठपुर–नानभान आदि से प्राप्त हुई है। ,

3. शाक्त सम्प्रदाय की प्रतिमाएँ :–

छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले से शैव और वैष्णव के साथ शाक्त धर्म की प्रतिमाएँ भी प्राप्त हुई है। इन स्थलों में भरतपुर–हरचौका, भँवरखोह, बैकुण्ठपुर–चामट पहाड,नानभान,खड़गवाँ–मंगोरा आदि से प्राप्त हुई है।

4. जैन–बौद्ध सम्प्रदाय की प्रतिमाएँ :–

छत्तीसगढ़ में सिरपुर, मल्हार, नगपुरा, भोंगापाल आदि से प्रचुर मात्रा में जैन–बौद्ध धर्म की प्रतिमाएँ मिली है। किन्तु कोरिया कुछ ही प्रतिमाएँ केशगवाँ (सोनहत) ऋषभ नाथ की प्रतिमा प्राप्त हुई है।

5. अन्य मूर्तियाँ :–

शैव, वैष्णव और शाक्त सम्प्रदाय की प्रतिमाएँ प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुई है। इनके अतिरिक्त प्राप्त मूर्तियों को अन्य श्रेणी में रखा गया है। इनमें भरतपुर–हरचोका, खड़गवाँ–धवलपुर, मंगोरा, बरतुंगा और मनेन्द्रगढ़–छिपछिपी आदि से प्राप्त हुई है।

संदर्भ :–

1. कोरिया जिला, गवर्न्मेन्ट वेब साइट : https://korea.gov.in/map
2. कोरिया जिला, गवर्न्मेन्ट वेब साइट :https://korea.gov.in/at-a-glance
3. कोरिया जिला, गवर्न्मेन्ट वेब साइट : https://korea.gov.in/dranage
4. कोरिया जिला, गवर्न्मेन्ट वेब साइट : https://korea.gov.in/dranage
5. अलंग, संजय, छत्तीसगढ़ की पूर्व रियासतें एवं जमींदारियाँ, वैभव प्रकाशन, रायपुर, 2011
6. गुप्त, प्यारे लाल, प्राचीन छत्तीसगढ़, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, 1973
7. वर्मा, राजेन्द्र, मध्यप्रदेश जिला गजेटियर, सरगुजा, गजेटियर अनुभाग, राजभाषा एवं संस्कृति संचालनालय, संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश, भोपाल, 1998.
8. रात्रे, बाबूलाल, सरगुजा रियासत में प्रशासनिक व्यवस्था का ऐतिहासिक अध्ययन (1900ई. से 1948 ई. तक), पी. एचडी. शोध प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर.
9. सिंह, प्रभात (स्थानीय निवासी एवं वंशज, राजपरिवार कोरिया) भगवानपुर, भरतपुर, कोरिया से शोधार्थी को स्थल सर्वेक्षण के दोरान प्राप्त जानकारी
10. सिंह, सुनील (स्थानीय निवासी एव केयरटेकर, राजमहल, कोरिया रियासत) रमदईया धाम, बैकुण्ठपुर, जिला कोरिया (छत्तीसगढ़) से शोधार्थी को स्थल सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त जानकारी
11. गुप्ता, ड़ॉ. दीपक कुमार (स्थानीय निवासी एवं शोधकर्ता, शहीद नंदकुमार पटेल विश्वविद्यालय, रायगढ़) बैकुण्ठपुर, कोरिया से शोधार्थी को स्थल सर्वेक्षण के दोरान प्रदत्त जानकारी drdeepakgupta1306@gmail.co

(सीतामढ़ी), हरचोका, (भरतपुर)

अवसादी–चट्टान जीवाश्म

समुद्री जीवाश्म पार्क, आमाखेरवा,(मनेन्द्रगढ़)

कोरिया रियासत राज्य प्रतीक चिन्ह,

भित्तिचित्र युक्त शैलाश्रय लावाहोरी, (भरतपुर)

भित्तिचित्र में पुष्प प्राचीन लिपि अंकन,

तिलौली, (भरतपुर)

पूर्व मुखी शैलोत्कटित गुफा उत्तर मुखी शैलोत्कटित गुफा

(सीतामढ़ी), हरचोका, (भरतपुर)